सात नारी प्रधान कवितायें–नन्दलाल भारती

1 –श ंखनाद

कब तक दबाओगे आवाज
अब तो शंखनाद करने दो ।
कब तक डंसेगा पुराना जख्म
अब तो पूज जाने दो ।
अबला जीवन स्वीकार नहीं,
अब तो सबला बन जाने दो ।
घर–गृहस्ती का मान अमान्य नही
अब तो नभ नाप लेने दो ।
आरक्षण ना कर पायेगा भला,
खुद के पांव खड़ी हो जाने दो ।
अधिकार हमें भी आजादी का,
अब तो थोंथी बातें बदल जाने दो ।
क्या आसूं पीकर जीना ही नसीब ?
अब तो मुक्ति पा जाने दो ।
सीता सावित्री का मुकुट भार नही,
अब तो वक्त के साथ चल जाने दो ।
बहुत हुई अग्निपरीक्षायें और अब ना
बस अब तो पांव टिकाने दो ।

2–जीवन पथ

गिर–गिर कर चलने की जिद ने,
सीखा दिया है चलना,
सीखने की जिद ने सीखा दिया,
जमीन पर पांव टिकाना ।
पांव–पांव टिकाते–टिकाते,
शुरू कर दिया सपने भी देखना
देखते–देखते कर दिया है साकार ।
बीटिया के सपने
अब तो हरने लगे है दर्द भी
जीवन रक्षक दवाई की तरह।
कामयाबी की मिशालें तो अब
बदलने लगी है पुरानी सोच
पाने लगे है आकार ,
बेटा–बेटी एक समान के विचार।
जाग चुका है जज्बा
कल्पनालोक रोशन करने का
बीटिया की उड़ान को देखकर
अब तो मन होता है
कि हर बेटी से कहूं
आ थाम लूं तेरी अंगुली
और
चलना सीखाउं जीवन पथ पर
जगा दूं जीवन के कैनवास पर
रंग भरने का जज्बा

क्योंकि
तुम हो तो रोशन है ये दुनिया ।

3–जख्म

लड़की आंख की बाढ कर देती है
चुगली छिपाने पर भी,
रिसते जख्म के दर्द का ।
थमते दर्द के वक्त
उग जाते है अनावश्यक सवाल
अकेली लड़की के सामने ।
कहां से क्यों ?
मां–बाप शादी–शुदा जिन्दगी के बारे में
मिलने लगती है नसीहते,
बिना सहारे कैसे कटेगा जीवन आदि अनेक ।
हां– ना के बाद,
तनने लगती है अंगुलिया
अकेली लड़की के सामने ।
ललकार उठती है लड़की,
आकाश छूने की ललक में
कट जायेगा जीवन मिल जायेगा मुकाम
और
बन जायेगी सुनहरी पहचान।
सच बन सकती है सहारा भी
आज की लड़की
अगर भेद के तेजाब से
जख्म सींचने वाले
समानता का मरहम लगाये तब ना

4–कैनवास

बीटिया बड़ी होने लगी है
और मेरा घर लगने लगा है छोटा ।
बीटिया अंगुली पकड़ते–पकड़ते
उड़ान भरने लगी है ।
पीछे देखने पर लगता है
बौना हो गया है वक्त
नन्ही अंगुलियों का स्पर्श
कल की बात लगता है ।
बीटिया की सोच का कैनवास
बड़ा हो गया है
बढते कैनवास को देखकर
बढने लगा है मेरा आत्मबल ।
बीटिया जमा करने लगी है
रंग
दुनिया सजाने के लिये ।
खुद के खींचे खाके में
भर देती है रंग
और
जीवन्त कर देती है कल्पना

रह जाता हूं मैं भौचक्का ।
सोचता हूं क्या ?
वही गिर–गिर कर चलती
तुतलाती,दीवार पर लकीर उकेरती
बीटिया है
जिसने थाम लिया है कूंची
और
भरने लगी है रंग
दुनिया के कैनवास पर

5– समानता का हाथ

जीवन संचार जगत का आधार है नारी
बिन नारी कैसा नर ?
बिन नर कैसी नारी
सूरज एक,एक चांद दोनो,
निभाते बराबर जिम्मेदारी
धरती एक,
एक आसमान कहे दुनिया सारी
बिन नारी ब्यर्थ वैभव सारे ,
अपशकुनी लगती नातेदारी
बिन नारी कैसा जीवन ?
माने सुर–असुर और संसारी
धरती का बसन्त जीवन का श्रृंगार है नारी
नारी संग हंसते रिश्ते –नाते और दुनिया सारी
मर्यादा की टंगी खूंटी पावन कर्म निभाये नारी,
आओ बढाये समानता का हाथ,
मां,बेटी,बहना और पत्नी भी तो है नारी ।

6– नारी जन्म होत कई–कई बार

नारी जन्म होत कई–कई बार
जन्म की डोर बंध जाती बार–बार
परमार्थ की दीवानी,
मुक्ति की ना सोचे एक बार
ना खोई ममता ,
ना जोड़ी डोर स्वार्थ से एक बार
नारी जन्म होत कई–कई बार.....
बेटी के रूप में जन्मी पहली बार
अंगना बह उठी ठुमक–कुमक सोंधी बयार
चले पग बाजे पायलिया खुशियां बरसे हजार
नारी जन्म होत कई–कई बार.....
होश आया अच्छी बीटिया की गुहार
सुख–दुख संग बाप की पगड़ी जोड़े सितार
भईया गाये बहना तेरा निश्छल प्यार
नारी जन्म होत कई–कई बार.....
उम्र करवट बदली दूसरी बार
पत्नी के रूप में जन्म हुआ एक और बार
पति की पहचान संग फर्ज बढे हजार
नारी जन्म होत कई–कई बार.....

तीसरा जन्म अति प्यारा, शीश झुकाये संसार
मां के जन्म में नींद चैन सब खोया बार–बार
सौभाग्यवती, पहचान बने बच्चों के संस्कार
नारी जन्म होत कई–कई बार.....
नारी प्रधान न्यारा देश भारत कहलाता हमार
होत और भी जन्म, कर–कर बखान ना थके संसार
धर्म–कर्म और वादे पर जीती–मरती नारी हजारो बार
नारी जन्म होत कई–कई बार